

शोकान्स्ककुन्दोश्च MBh. 13, 2829. Çik. 113. Megh. 48. 66. ad 112. MĀLAT. 24, 2. कुन्दलता MĀLAT. 43. कुन्देन दत्तम् — विधाय धाता ÇRṆGĪRAT. 3. कुण्डामदत्ती (sic) Gīt. 10, 14. पुष्पाणां प्रकारः स्मितेन रचितो नो (= न) कुन्दजात्यादिभिः AMAR. 40. कुन्दैः सविधमवधूकसितावदतिः R. 6, 23. गोतीरकुन्देन्दुमृणालरजतप्रभं MBh. 3, 807. 10240. हेसकुन्देन्दुसदृशं मृणालरजतप्रभं 13, 831. शङ्खकुन्देन्दुपाण्डुरं Suçr. 2, 171, 19. 318, 1. तुषारकुन्देन्दुनिमेष्य हरिः R. 4, 2. — 2) m. wohlriechender Oleander, Nerium odorum Ait. (करवीर) RĪGĀN. im ÇKDr. — 3) m. das Harz der Boswellia thurifera Roxb. AK. 2, 4, 9. MED. Vgl. कुली, कुन्द, कुन्दरु, मुकुन्द. — 4) m. die Drehscheibe der Drechsler TRIK. 3, 3, 205. H. 909. H. an. MED. — 5) m. einer der neun Schätze Kuvera's H. 193. H. an. MED. — 6) m. ein Bein. Viṣṇu's H. an. MBh. 13, 7036. Vgl. कुन्दर. — 7) m. N. pr. eines Berges Bhāg. P. 5, 20, 10.

कुन्दक m. = कुन्दरुका RĪGĀN. im ÇKDr.

कुन्दम m. Katze TRIK. 2, 3, 8. Hār. 83.

कुन्दमाला (कु + मा) f. Titel eines Werkes Sāh. D. 93, 13.

कुन्दर m. 1) N. eines Grases, = काण्डुर, तेत्रभूत, खरच्छ, किएटी, दोषपत्र, मृगवल्लभ, रसाल, सुतृण; in Kaliṅga कुन्दरा RĪGĀN. im ÇKDr. — 2) ein Bein. Viṣṇu's (vgl. कुन्द 6.) MBh. 13, 7036.

कुन्दिनी (von कुन्द) f. eine Jasmingruppe TRIK. 1, 2, 36.

कुन्द 1) m. Maus, Ratze ÇABDAR. im ÇKDr. Vgl. उन्दर, उन्दरु. — 2) f. das Harz der Boswellia thurifera Roxb. ÇABDAM. im ÇKDr. und Sch. zu AK. 2, 4, 9. — Vgl. कुन्द, कुन्दरु.

कुन्दम gaṇa चूर्णादि zu P. 6, 2, 134 und v. l. für मुकुन्द im gaṇa श्रेण्यादि zu 2, 1, 59.

कुन्दर m. = कुन्द 2. BHAR. zu AK. 2, 4, 9. ÇKDr.

कुन्दरु m. f. dass. AK. 2, 4, 9.

कुन्दरुका 1) m. f. dass. RĪGĀN. im ÇKDr. कुन्दरुकागुरु Suçr. 1, 139, 10. — 2) f. Boswellia thurifera Roxb. AK. 2, 4, 9, 12.

कुन्द्, कुन्द्पति lügen Dhātup. 32, 6. — Vgl. कुद्, गुन्द्.

1. कुप्, कुप्यति (Dhātup. 26, 122) und कुप्यते; चुकोप; चकुपत् 1) in Bewegung —, in Aufregung —, in Wallung gerathen: दोषाः कुप्यन्ति Suçr. 1, 23, 8. 2, 146, 8. दोषाः कुपिताः प्रशमयितव्याः 184, 11. प्रोचुः प्राञ्जलयो विप्राः प्रहृष्टाः कुपितवचः Bhāg. P. 3, 16, 15. — 2) aufwallen, erzürnen, zürnen Dhātup. कस्माद्वाञ्छन् कुप्यसि MBh. 3, 1015. 14653. M. 3, 229. Mṛkṣh. 86, 15, 16. Hit. II, 164. तस्य तद्वचनं श्रुत्वा — चुकोप MBh. 2, 1482. R. 2, 96, 40. न च कुप्ये MBh. 3, 12420. कुप्यस्व 1, 3289. कुप्येरन् 5791. नन्दते कुप्यते चापि 13, 745. 3024. Hit. 104, 16. Bhāg. P. 6, 18, 47. Mit dem dat. (Vop. 3, 15) oder gen. der Person: एतच्छ्रुत्वा तु नृपतिस्तत्तकाय चुकोप ह MBh. 1, 848. Pāṇkāt. 23, 22. MĀLAT. 57. RAGH. 3, 56. नैवास्य स चुकोप ह MBh. 1, 2890. R. 4, 19, 24. 5, 39, 22. mit dem acc.: इदानीं कुप्यते देवान्देवराजः 1, 49, 7. कुपितं erzürnt, böse M. 9, 313. N. 20, 25. 27. 26, 16. R. 2, 63, 42. Viçv. 6, 6. Çik. 78, 14. Megh. 103. ÇRṆGĪRAT. 8. Vet. 9, 12, 12, 11. Pāṇkāt. 108, 12. कुपितानन् 219, 16. mit dem gen.: किं वत्स कुपितो मे ऽसि येन मां नाभिभाषसे R. GORR. 2, 66, 30. mit उपरि auf: अस्माकमुपरि स्वामिनि कुपिते Pāṇkāt. 73, 15. 89, 15. — caus. 1) in Bewegung bringen, erschüttern, aufregen, in Wallung bringen: त्वं दिवो बद्धः सानुं कोपयः RV. 1, 54, 4. कोपयथ पृथिवीम् 5, 57, 3. 10, 44, 8. अग्निना का-

पितं रक्तम् Suçr. 1, 37, 8. (वस्तिः) सपितं कोपयेद्वायुम् 2, 204, 3. — 2) in Zorn versetzen, erzürnen: आशीविषान्नेत्रविषान्कोपयेन्न च पण्डितः MBh. 2, 2140. कुप्य च कोपय Mṛkṣh. 86, 16. कोपयद्दिशं पाण्डवान् MBh. 3, 1940. R. 3, 8, 11. कोपयामास वेदेहो 2, 96, 41. तिप्रं प्रसादयति संप्रति को ऽपि तानि कात्तमुखानि रतिविप्रह्कोपितानि GHAT. 3. med.: व्याघ्रान्मृगः कोपयसे ऽतिवेलम् MBh. 2, 2187. किमर्थं वा कैरवान्कोपयति सः 1, 5790. आशीविषास्ते शिरसि पूर्णकोपा मक्षाविषाः । मा कोपिष्ठाः सुमन्दतन्मा गमस्त्वं यमतयम् ॥ 2, 2188. कोपयान 3, 1956. कोपयित्वा R. 5, 31, 6. कोपयितुम् 4, 32, 20. Çik. 93, 15. कोपित M. 9, 315. MBh. 1, 1323. R. 4, 33, 32. Bhāg. P. 1, 7, 48. — 3) zürnen: स्वस्ति किं कोपयतो विधातुः Bhāg. P. 4, 5, 11. — Vgl. die lautlich und begrifflich nahestehende Wurzel कम्प्.

— अति heftig zürnen: शक्तिरत्यकुपत् BHATT. 13, 55.

— परि 1) in heftige Bewegung gerathen: विपद्गतं ज्वलितकुताशनप्रभं सुदर्शनं परिकुपितं निशम्य ते MBh. 1, 1186. — 2) heftig zürnen: परिकुप्यन्ति ते राजन्सततं द्विषतां द्विजाः MBh. 13, 2101. दिवाकरः परिकुपितो यथा दहेत्प्रजाः 1, 1254. — caus. 1) in eine heftige Bewegung versetzen, stark aufregen: अत्यर्थं बलवान्पुष्पा शरिरे परिकोपितः MBh. 14, 469. — 2) in grossen Zorn versetzen: ब्राह्मणैः परिकोपितः MBh. 13, 7403.

— प्र 1) in Bewegung —, in Wallung gerathen: यः पर्वतान्प्रकुपितं श्रेष्ठात् RV. 2, 12, 2. अग्निना कोपितं रक्तं भृशं जलोः प्रकुप्यति Suçr. 1. 37, 8. वायुः प्रकुप्यति 2, 396, 4. 147, 2. दोषाः 1, 24, 2. 47, 17. 53, 19. ऊष्मा प्रकुपितः काये तीव्रवायुसमीरितः MBh. 14, 468. यस्य देविः प्रकुपितं चित्तं मुह्यति देहिनिः । उन्माह्यति स तु तिप्रम् 3, 14508. — 2) aufbrausen, in Zorn gerathen: आराधिता हि शोलेन प्रपन्नैश्चोपसेविताः । राजानः संप्रसीदन्ति प्रकुप्यन्ति विपर्यये ॥ R. 2, 26, 34. निमित्तमुद्दिश्य हि यः प्रकुप्यति ध्रुवं स तस्यापगमे प्रशान्यति Pāṇkāt. 1, 313. प्रकुपितं erzürnt MBh. in BENF. Chr. 53, 23. Pāṇkāt. 38, 1. Bhāg. P. 1, 7, 34. केन केतुना भगवांश्चन्द्रो मयि प्रकुपितः Pāṇkāt. 163, 5. तदिनादारभ्य व्याघ्रान्प्राति प्रकुपितो ऽस्मि 231, 19. अतिप्रकुपितं DAÇAK. in BENF. Chr. 194, 11. प्रकुप्त (!) Vikr. 130. — caus. 1) in Bewegung —, in Wallung versetzen: अघ्नान्नागते काले स्वयं दोषान्प्रकोपयेत् MBh. 14, 465. — 2) zum Zorn reizen, erzürnen: परामप्यापदं प्राप्तो ब्राह्मणान् प्रकोपयेत् M. 9, 313. 314. आनन्दयेत् — प्रकोपयेत् Jāñ. 1, 355. Bhāg. P. 3, 19, 4. प्रकोपित R. 5, 36, 41. Pāṇkāt. 67, 22. 68, 4. 173, 16. Hit. I, 81, v. l. Bhāg. P. 4, 4, 28. DAÇAK. in BENF. Chr. 181, 6.

— सम् 1) sich in Bewegung setzen (?): प्रत्यङ्गनांस्तिष्ठति संचुकोपात्तकाले संसृज्य विश्वा भुवनानि गोपाः (रुद्रः) ÇVETĀÇV. Up. 3, 2. — 2) in Zorn gerathen: एवं संकुपिते लोके MBh. 3, 1093. — caus. 1) in Wallung gerathen: सापि जघन्ये नैदाधे समिवैव कोपयति ÇAT. Br. 1, 4, 4, 16. — 2) in Zorn versetzen, reizen: पार्थ संकोपयन्निव MBh. 4, 1845.

2. कुप्, कोपयति sprechen oder glänzen Dhātup. 33, 106.

कुपे (von 1. कुप्) m. Wagebalken, an welchem die zwei Schalen hängen, ÇAT. Br. 2, 6, 2, 17. KĀTJ. ÇR. 5, 10, 21.

1. कुपट (1. कु + पट) m. n. ein schlechtes Gewand Bhāg. P. 5, 9, 11.

2. कुपट (wie eben) m. N. pr. eines Dānava (ein schlechtes Gewand habend) MBh. 1, 2534. — Vgl. 2. कुपथ.

1. कुपथ (1. कु + पथ) m. ein schlechter Weg, Irrweg Vop. 6, 94. ÇABDAR. im ÇKDr. Bhāg. P. 5, 6, 10. कुपथदष्टृणाम् 6, 7, 14.